Ramazan-ul-Kareem Ki Sajawat (Hindi)

MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 444
Weekly Booklet : 444

रमज़ानुल करीम की सजावट

सफ़ह़ात : 17

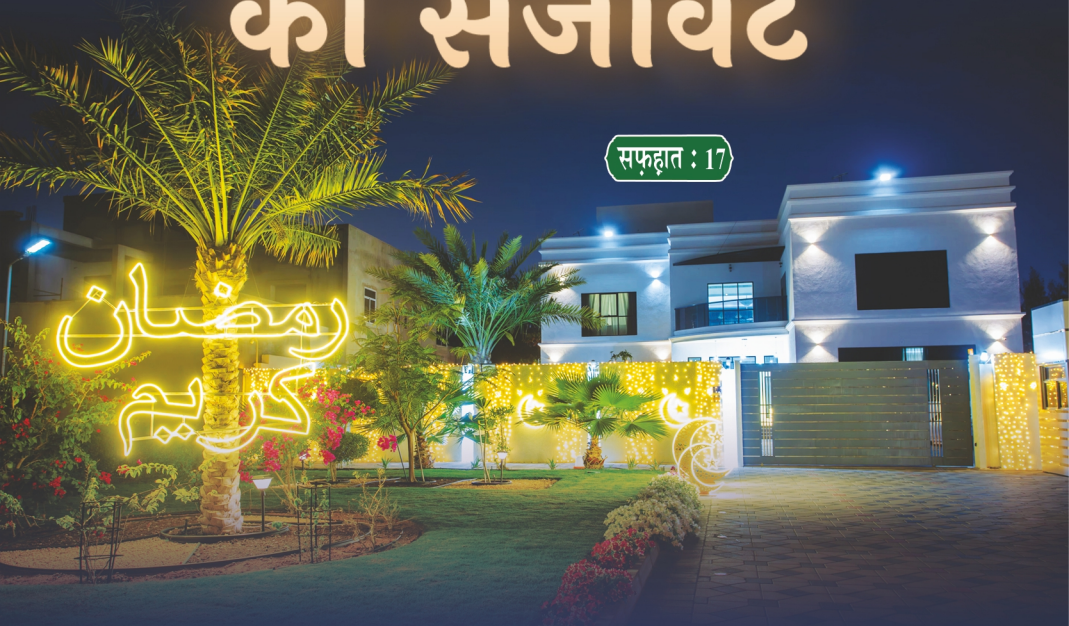

मौला अ़ली की फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہما के लिये दुआ 01

मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ की सजावट 03

मसाजिद को रौशन करने की फ़ज़ीलत 06

माहे रमज़ान से मह़ब्बत की अछूती मिसाल 13

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

रमज़ानुल करीम की सजावट

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "रमज़ानुल करीम की सजावट" पढ़ या सुन ले उसे माहे रमज़ान का ह़क़ीक़ी क़द्रदान बना और उस की क़ब्र को रौशन फ़रमा कर उसे मां बाप समेत अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बिला ह़िसाबो किताब जन्नतुल फ़िरदौस में पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का फ़रमाने आ़लीशान है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गर्दनें (यानी ग़ुलामों को) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है। (تاریخ بغداد، 7/172، رقم 3607)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के लिये दुआ

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ हमदानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रमज़ानुल मुबारक की पहली रात बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि मसाजिद पर क़िन्दीलें चमक रही (यानी चराग़ रौशन) हैं और लोग क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे हैं। येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : نَوَّرَ اللّٰهُ لَكَ يَا عُمَرَ ابْنَ الْخَطَّابِ فِيْ قَبْرِكَ كَمَا نَوَّرْتَ مَسَاجِدَ اللّٰهِ بِالْقُرْاٰنِ यानी ऐ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه !

अल्लाह पाक आप की क़ब्र को ऐसा ही रौशन करे जैसा आप ने मसाजिद को क़ुरआने करीम की तिलावत से रौशन किया। (موسوعہ ابن ابی الدنیا، 1/369، رقم 30)

अल्लाह पाक की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

हर त़रफ़ नूर छाने वाला है मरह़बा चार सू उजाला है
ग़मज़दा दिल की खिल उठीं कलियां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान का इस्तिक़बाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक की अ़ज़मतो शान के क्या कहने, येह महीना बड़ी बरकतों, रह़मतों और मग़्फ़िरतों का ख़ज़ीना है। अल्लाह पाक इस माहे मुबारक में अपना फ़ज़्लो करम अपने बन्दों पर इस क़दर बढ़ा देता है कि जन्नत के दरवाज़े खोल कर जहन्नम के दरवाज़े बन्द फ़रमा देता है येही नहीं बल्कि नेकियों का अज्रो सवाब भी कई गुना बढ़ा देता है। रमज़ानुल मुबारक के रोज़ेदारों पर दिन हो या रात रह़मते इलाही की बरसात होती रहती है लेकिन अल्लाह पाक का येह मेहरबान महीना फ़क़त "29" या "30" दिन का मेहमान होता है, आ़म त़ौर पर जब कोई मेहमान हमारे घर आता है तो हम उस का अच्छे अन्दाज़ से इस्तिक़बाल और ख़ातिर तवाज़ोअ़ करते हैं और अगर कोई निहायत मुअ़ज़्ज़ज़ और क़ाबिले एह़तिराम मेहमान आए जो हमें मुख़्तलिफ़ तह़ाइफ़ (Gifts) और खाने पीने की रंगारंग नेमतें अ़ता करे तो ऐसे मेहमान के इस्तिक़बाल का अन्दाज़ भी मुन्फ़रिद होता है। अल्लाह पाक की त़रफ़ से अ़ता किया गया "**रमज़ाने करीम**" हम गुनहगारों के लिये एक निहायत मुअ़ज़्ज़ज़, मोह़तरम और मेहरबान मेहमान है, इसी लिये इस माहे मुबारक की आमद पर दुनिया भर में मुसलमान आ़शिक़ाने रमज़ान अपने मुल्कों,

शहरों, अ़लाक़ों, मस्जिदों और घरों को सजाते और ख़ुशियां मनाते नज़र आते हैं और क्यूं न ख़ुशियां मनाएं कि येह माहे मुबारक है ही इतनी बरकतों, रह़मतों और बख़्शिशों वाला कि इस माहे मुबारक के आने पर ख़ुश होना, एक दूसरे को मुबारकबाद देना सुन्नत (से साबित) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/137)

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (रमज़ानुल मुबारक के तशरीफ़ लाने पर) फ़रमाया करते : "उस महीने को ख़ुश आमदीद जो हमें पाक करने वाला है।" (تنبیہ الغافلین، ص177)

आया रमज़ान आ गया रमज़ां वाह ! क्या बात माहे रमज़ान की
जान रमज़ान पर मेरी क़ुरबां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ की सजावट

तक़रीबन पौने आठ सौ साल पहले के मश्हूर तारीख़दान सय्याह़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल मारूफ़ इब्ने बत़ूता लिखते हैं : मक्कए पाक में रहने वालों की आ़दत है कि जब रमज़ानुल मुबारक का चांद नज़र आता है तो बड़ी धूम धाम हो जाती है, मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ (जिस मुबारक मस्जिद में ख़ानए काबा शरीफ़ मौजूद है उस) के फ़र्श पर नई चटाइयां बिछा कर, इतनी ज़ियादा मोम बत्तियां और मशअ़लें जलाई जाती हैं कि ह़रमे मस्जिद रौशनियों से जगमगा उठता है, मस्जिद शरीफ़ में मह़ाफ़िल क़ाइम की जाती हैं, हर त़रफ़ ख़ुशी व मसर्रत का समां होता है। चारों सच्चे मज़ाहिब (यानी ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी और ह़म्बली) के आ़शिक़ाने रसूल अपने अपने इमाम साह़िबान के साथ नमाज़ें अदा करते हैं, मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ क़ुरआने करीम की तिलावत करने वालों से गूंज उठती है, जिस से दिलों में रिक़्क़त (यानी नर्मी) पैदा होती और आंखें अश्कबार हो जाती हैं। बाज़ लोग सिर्फ़ त़वाफ़े ख़ानए काबा में मश्ग़ूल हो जाते हैं और बाज़ ह़तीम में तन्हा

नमाज़ पढ़ने में मसरूफ़ रहते हैं। शाफ़ेई आशिक़ाने रसूल की आदत है कि वोह नमाज़े तरावीह़ अदा कर के अपने इमाम के साथ ख़ानए काबा का त़वाफ़ करते हैं।

सह़री के वक़्त मस्जिदे ह़राम के मशरिक़ी मीनार पर मुक़र्रर ज़मज़मी मोअज़्ज़िन लोगों को सह़री की तरग़ीब देता है। हर मीनार की चोटी पर एक लकड़ी का शहतीर नस्ब होता है जिस पर शीशे के दो बड़े क़िन्दील रौशन कर के लटकाए जाते हैं, जब फ़ज्र का वक़्त क़रीब आता है तो उन क़िन्दीलों को एक एक कर के नीचे ला कर बुझा दिया जाता है और फिर अज़ान दी जाती है। मक्कए पाक के वोह घर जो मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ से दूर होते हैं और उन तक अज़ान की आवाज़ नहीं पहुंचती, वोह आशिक़ाने रसूल इन रौशन क़िन्दीलों को देख कर सह़री करते हैं और जब येह नज़र आना बन्द हो जाती हैं तो खाना पीना छोड़ देते हैं।

माहे मेहरबान, माहे रमज़ान के आख़िरी अशरे की त़ाक़ रातों में क़ुरआने करीम ख़त्म किया जाता है जिन में क़ाज़िये इस्लाम, उलमाए किराम और शहर के बड़े बड़े लोग शिर्कत करते हैं। इन मह़ाफ़िल में मक्कए पाक के आला ख़ानदान के बच्चों से क़ुरआने करीम ख़त्म करवाया जाता है, इस के बाद रेशम से आरास्ता मिम्बर तय्यार किया जाता है और शम्अ़ रौशन की जाती है फिर वोह बच्चा (जिस ने ख़त्मे क़ुरआन किया वोह) ख़ुत्बा (यानी नेकी की दावत) देता है। उस के बाद बच्चे का वालिद लोगों को अपने घर आने की दावत देता है और घर में उन ह़ज़रात की मेहमानी करता और उन्हें बेहतरीन खाने और मिठाइयां खिलाता है। माहे रमज़ान के पूरे आख़िरी अशरे (जिसे जहन्नम से आज़ादी का अशरा कहा जाता है) इस की त़ाक़ रातों में येही मामूल होता है।

सत्ताईसवीं रात का ख़ुसूसी एहतिमाम

अहले मक्का के नज़्दीक सत्ताईसवीं शब (लैलतुल क़द्र) सब से अ़ज़ीम रात होती है वोह इस मुबारक रात का एहतिमाम दीगर तमाम रातों से बढ़ कर करते हैं।

इस बा बरकत रात में मक़ामे इब्राहीम के पीछे क़ुरआने करीम का ख़त्म होता है। हरमे पाक में एक बड़े तीन मन्ज़िला लकड़ी के ढांचे पर क़िन्दीलें और शम्एं इतनी ज़ियादा रौशन की जाती हैं कि इन की चमक आंखों को ख़ीरा कर देती है। 29वीं रात को फ़िक़्हे मालिकी के इमाम अपना क़ुरआने करीम ख़त्म करते हैं जो दिखावे से पाक एक निहायत पुर वक़ार महफ़िल होती है। (رحلۃ ابن بطوطہ، ص102 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आज रमज़ानुल मुबारक में जो मसाजिद में रौशनी और चराग़ां की जा रही है येह कोई नई बात नहीं है बल्कि आज से सैंकड़ों साल पहले मस्जिदुल हराम शरीफ़ में भी रौशनी होती थी और अब भी दुनिया के कई ममालिक में मसाजिद और घरों को आमदे रमज़ान पर सजाया जाता है बल्कि हमारे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी ज़माने में भी मसाजिद में रौशनी करने की रिवायात मौजूद हैं जैसा कि

मस्जिदे नबवी में चराग़ की इब्तिदा

सहाबिये नबी, हज़रते तमीमदारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के ग़ुलाम सिराज رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में खजूर की टहनियों और पत्तों से रौशनी की जाती थी। हम क़नादील (एक क़िस्म के फ़ानूस जिस में चराग़ जलाते हैं) रौग़ने ज़ैतून और रस्सियां लाए और मैं ने (क़िन्दीलों को लटका कर) मस्जिद में रौशनी की। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह देख कर पूछा कि हमारी मस्जिद को किस ने रौशन किया है ? हज़रते तमीम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : मेरे इस ग़ुलाम ने। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : इस का क्या नाम है ? आप ने अ़र्ज़ की : फ़त्ह। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि इस का नाम सिराज है। पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम सिराज रखा। (وفاء الوفا، 1/596 ملخصًا، الاستیعاب، 2/242 ملخصًا)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

मस्जिद में लाइटिंग करने का रवाज बहुत पुराना है

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ अपनी मश्हूर तफ़्सीरे क़ुरआन "**नूरुल इ़रफ़ान**" में लिखते हैं : ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام बैतुल मुक़द्दस में ऐसे रौशनी फ़रमाते थे कि कोसों (यानी मीलों दूर) तक उस की रौशनी में औ़रतें चरख़ा कात लेती थीं। ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस में किब्रीते अह़मर (लाल गंधक) की रौशनी की, जिस की रौशनी बारह मुरब्बअ़ मील होती थी और उसे चांदी सोने से आरास्ता फ़रमाया। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 301)

तफ़्सीरे क़ुरआन रूहुल बयान में है : ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने मस्जिद में एक ह़ज़ार सात सौ "**सोने के क़िन्दील**" चांदी के ज़न्जीरों से लटकाने का ह़ुक्म जारी फ़रमाया था। (تفسیر روح البیان، پ10، التوبۃ، تحت الآیۃ:18، 3/400)

मसाजिद को रौशन करने की फ़ज़ीलत

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने रिवायत की, कि "जिस ने अल्लाह पाक की मसाजिद को रौशन किया अल्लाह पाक उस की क़ब्र को रौशन फ़रमाएगा और जिस ने मस्जिद को पाकीज़ा ख़ुश्बू से ख़ुश्बूदार किया तो अल्लाह पाक उस की क़ब्र में जन्नत की ख़ुश्बू दाख़िल करेगा।"

(شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ص159 ملخصًا)

ह़दीसे पाक में बयान किया गया है : "जिस ने मस्जिद में चराग़ रौशन किया तो जब तक मस्जिद में रौशनी रहती है तब तक आ़म फ़रिश्ते और अ़र्श उठाने वाले ख़ास फ़रिश्ते उस के लिये बख़्शिश की दुआ़ मांगते रहते हैं।"

(تفسیر کبیر، پ10، التوبۃ، تحت الآیۃ:18، 6/11)

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! रमज़ानुल करीम की तशरीफ़ आवरी पर दुनिया भर में इस माहे मुबारक को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से Celebrate किया जाता है। कई ममालिक में रमज़ानुल मुबारक की आमद पर घरों, गलियों को "रमज़ानुल करीम और अहलन या रमज़ान" वग़ैरा के नाम के स्टीकर्ज़ और हिलाले रमज़ान (यानी रमज़ान शरीफ़ के चांद) के बोर्डज़ वग़ैरा लगा कर सजाया जाता है। बच्चे नए लिबास पहने, मुख़्तलिफ़ किन्दीलें हाथों में लिये चौराहों, गली कूचों में माहे रमज़ान की आमद पर मुबारकबाद देते और माहे रमज़ान की आमद पर ख़ुशी मनाते दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया के ज़रीए मुख़्तलिफ़ ममालिक मसलन अ़रब शरीफ़, मिस्र, इ़राक़, शाम, यमन, इमारात वग़ैरा की रमज़ानुल मुबारक की आमद पर ख़ुशियों और सजावट की मुख़्तलिफ़ वीडियोज़ देखी जा सकती हैं। याद रखिये ! माहे नुज़ूले क़ुरआन "**रमज़ान शरीफ़**" और माहे विलादते नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर घरों, गलियों, मह़ल्लों को सजाने की क़ुरआनो ह़दीस में कहीं भी मुमानअ़त नहीं, बल्कि क़ुरआने करीम के पारह 8 सूरतुल आराफ़, आयत नम्बर 32 में इरशाद होता है : ﴿قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम फ़रमाओ : अल्लाह की उस ज़ीनत को किस ने ह़राम किया जो उस ने अपने बन्दों के लिये पैदा फ़रमाई है ?

तफ़्सीरे क़ुरआन "**सिरातुल जिनान**" में है : इस आयत से मालूम हुवा कि जिस चीज़ को शरीअ़त ह़राम न करे वोह ह़लाल है। हुर्मत (यानी ह़राम होने) के लिये दलील की ज़रूरत है जब कि ह़िल्लत (यानी ह़लाल होने) के लिये कोई दलील ज़रूरी नहीं। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा 8, अल आराफ़, तह़तल आयह : 32, 3/303)

जन्नत सजाई जाती है

ह़दीसे पाक में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से

रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक रमज़ानुल मुबारक के लिये सजाई जाती है। (شعب الایمان 3/312، حدیث:3633)

जन्नत कौन सजाता है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उसे (यानी जन्नत को) सोने से सजाया जाता है और ह़क़ीक़ी त़ौर पर इस की सजावट को अल्लाह पाक ही बेहतर जानता है। (مرقاۃ المفاتیح:4/458، تحت الحدیث:1967)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत ख़ुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए फिर सजाने वाले फ़रिश्ते हों तो कैसी सजाई जाती होगी, उस की सजावट हमारे वहमो गुमान से वरा है, बाज़ मुसलमान रमज़ान में मस्जिदें सजाते हैं, वहां क़ल्ई़ चूना करते हैं, झन्डियां लगाते, रौशनी करते हैं उन की अस्ल येह ही ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/143)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान "**शहरुल्लाह**" यानी अल्लाह पाक का महीना है, इस माहे मुबारक के अदबो ताज़ीम के लिये जो जितनी कोशिश करेगा वोह उतना ही ज़ियादा सवाब पाएगा। अल्लाह पाक की रह़मत से माहे रमज़ान के आने पर जो कोई मह़ब्बतो ताज़ीम के सबब अपने घर को सजाता है वोह रह़मते इलाही का ह़क़दार बनता है क्यूंकि माहे रमज़ान शरीफ़ से मह़ब्बत दर अस्ल अल्लाह पाक से मह़ब्बत है क्यूंकि इस माहे मुबारक से मह़ब्बत फ़क़त "**अल्लाह पाक की रिज़ा**" के लिये होती है, येही वज्ह है कि इस प्यारे महीने में इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ जाता है, इस माहे मुबारक में दिल इ़बादत के लिये तय्यार हो जाते हैं और जो लोग साल भर तिलावते क़ुरआने करीम से मह़रूम रहते हैं वोह भी

तिलावते क़ुरआने करीम की सआदत पाते हैं, मसाजिद नमाज़ियों से भर जाती और सहर व इफ़्तार के वक़्त फ़ज़ा बड़ी पुरकैफ़ हो जाती है, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रमज़ान लोगों का दिल बदल देता है कि इस के आते ही मस्जिदों में रौनक़ आ जाती है, तिलावतो ज़िक्र की कसरत हो जाती है। ग्यारह महीने वाज़ (यानी बयान) वोह असर नहीं करते जो सिर्फ़ "**रमज़ान की आमद**" असर करती है। (तफ़्सीरे नईमी, पा 2, अल बक़रह, तह़तल आयह : 185, 2/205)

अल्लाह पाक के लिये मह़ब्बत की मिसाल

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी से उख़रवी मक़्सद के लिये मह़ब्बत करना मसलन शागिर्द का अपने उस्ताद से या मुरीद का अपने पीर से इस लिये मह़ब्बत करना कि उन के ज़रीए वोह इल्म ह़ासिल कर के अच्छे आमाल कर सके और आख़िरत में कामयाब हो सके तो येह मह़ब्बत रिज़ाए इलाही के लिये मह़ब्बत है। इसी त़रह़ उस्ताद का अपने शागिर्द से इस लिये मह़ब्बत करना कि येह शागिर्द इल्म फैलाने का ज़रीआ है जिस के सबब उसे अल्लाह पाक की बारगाह में इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत मिलती है तो येह मह़ब्बत भी रिज़ाए इलाही के ज़ुमरे में शामिल है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : जो शख़्स अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये लज़ीज़ खाने तय्यार करे और अच्छे खाने बनाने की वज्ह से मुलाज़िम से मह़ब्बत करे तो येह शख़्स भी अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये मह़ब्बत करने वाला शुमार होगा। (احیاء العلوم 2/203،204)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَ کَرَمِهٖ ! हमें भी रिज़ाए इलाही के लिये माहे रमज़ान से प्यार है, ह़क़ीक़ी आ़शिक़े माहे रमज़ान, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَه ने चन्द अशआ़र में माहे रमज़ान से मह़ब्बत का ख़ूब इज़्हार फ़रमाया है, पढ़िये और मह़ब्बते रमज़ान में झूमिये :

मुझ को रमज़ान से महब्बत है

मेरे रब की येह ख़ास रहमत है
मुस्तफ़ा की बड़ी इनायत है

ग़ौसो अहमद रज़ा की बरकत है
मुझ को रमज़ान से महब्बत है

माहे रमज़ां से जिस को उल्फ़त है
क़ाबिले रश्क उस की क़िस्मत है

बेशक उस पर ख़ुदा की रहमत है
क़ब्रो महशर में वोह सलामत है

माहे रमज़ां जहां में फिर आया
मग़्फ़िरत का पयाम है लाया

रहमते हक़ का हो गया साया
लहज़ा लहज़ा नुज़ूले रहमत है

ख़ूब रौनक़ है माहे ग़ुफ़रां की
कैसी बरकत है माहे क़ुरआं की

वाह क्या बात माहे रमज़ां की
क्या ही रमज़ां की शानो शौकत है

पहला अशरा है ख़ास रहमत का
दूसरा मग़्फ़िरत का है अशरा

तीसरे में मिलेगी आज़ादी
नार से उस को जिस पे रहमत है

मस्जिदें हो गई हैं फिर आबाद
बढ़ गई नेकियों की है तादाद

सर्द बदियों का हो गया बाज़ार
बढ़ गया जज़्बए इबादत है

वाह सहरी की क्या बहारें हैं
ख़ूब इफ़्तार के नज़ारे हैं

रोज़ादारों के वारे न्यारे हैं
क्या तरावीह की भी लज़्ज़त है

माहे रमज़ां का ग़म अता फ़रमा
या ख़ुदा ! चश्मे नम अता फ़रमा

माहे रमज़ां के इश्क़ में रोना
दो जहां के लिये सआदत है

माहे रमज़ां के रोज़ादारों की
ख़ुश नसीबी है और ख़ुश बख़्ती

उस को फ़ैज़ाने माहे रमज़ां से
ख़ुल्द मिलती है मिलती जन्नत है

मालिके दो जहां ! पए जानां
तू बना उस को आशिक़े रमज़ां

माहे रमज़ां के इश्क़ में तड़पे
अर्ज़े अत्तार रब्बे इज़्ज़त है

(वसाइले फ़िरदौस, स. 29, 30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मसाजिद की रौनक़ें

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन के वक़्त मस्जिद में चराग़ां करना बहुत कारे सवाब (यानी सवाब का काम) है कि येह भी आबादिये मस्जिद (यानी मस्जिद आबाद करने) में दाख़िल है। मस्जिदे नबवी में सब से पहले आला फ़र्श ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने डाले, इस से पहले सिर्फ़ बजरी थी। इस की आ़लीशान इ़मारत सब से पहले ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने बनाई। इस में सब से पहले क़िन्दीलें तमीमदारी (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने रौशन कीं। अ़हदे फ़ारूक़ी में रमज़ान की तरावीह़ के मौक़अ़ पर आप ने चराग़ां किया और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللهُ عَنْه) को नूरे क़ब्र की दुआ़ दी (कि अल्लाह पाक आप की क़ब्र को रौशन करे)। (सह़ाबिये रसूल) ह़ज़रते दिह़या कल्बी (رَضِیَ اللهُ عَنْه) मस्जिदे नबवी में चराग़ां करते थे। येह सब ह़ज़रात अल्लाह पाक के प्यारे थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 301)

माहे रमज़ान शआ़इरुल्लाह में से है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुशी के मवाक़ेअ़ मसलन सालगिरह या शादी वग़ैरा पर घरों को सजाया और रौशनियों से जगमगाया जाता है, अगर ताज़ीमे रमज़ान की अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने घर को लाइटिंग वग़ैरा से सजाएंगे तो अल्लाह पाक की रह़मत से ज़रूर सवाब पाएंगे। माहे रमज़ान की आमद पर ख़ुशी मनाना और इस की ताज़ीम में घरों, दुकानों को सजाना सआ़दत मन्द लोगों का ह़िस्सा है क्यूंकि रमज़ाने करीम शआ़इरुल्लाह (यानी अल्लाह पाक की निशानियों) में से है और अल्लाह पाक की निशानियों की इ़ज़्ज़तो ताज़ीम करना परहेज़गार लोगों का काम है जैसा कि पारह 17 सूरतुल ह़ज, आयत नम्बर 32 में इरशाद होता है : ﴿وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآىِٕرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ۝۳۲﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़गारी से है।

"तफ़्सीरे नईमी" में है : शआ़इर से हर वोह चीज़ मुराद है जिन की ताज़ीम रब की इ़बादत की निशानी हो या वोह निशान जिन के क़ियाम का रब ने हुक्म दिया हो लिहाज़ा वोह जगह और वोह वक़्त और वोह अ़लामात जो दीन की निशानियां हों सब शआ़इरुल्लाह (यानी अल्लाह पाक की निशानियां) हैं। काबा, अ़रफ़ात, मुज़दलिफ़ा, सफ़ा, मर्वा, मिना, मस्जिदें, बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के मक़ाबिर (यानी मज़ारात), ऐसे ही रमज़ान, ईद, जुमुआ वग़ैरा शआ़इरे दीन हैं। (तफ़्सीरे नईमी, 2/97 मुलख़्ख़सन) बल्कि जिस चीज़ को अल्लाह पाक के मक़्बूल बन्दों से निस्बत हो जाए वोह भी शआ़इरुल्लाह (यानी अल्लाह पाक की निशानियां) बन जाती है, ह़ज़रते बीबी हाजिरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के क़दम मुबारक सफ़ा व मर्वा के पहाड़ों पर लगे तो वोह पहाड़ शआ़इरुल्लाह (यानी अल्लाह पाक की निशानियां) बन गए जिस का बयान क़ुरआने करीम के दूसरे पारे की सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 158 में मौजूद है।

मेहरबान महीना

रब का मेहमान "**माहे रमज़ान**" उम्मते मुस्त़फ़ा के लिये बड़ा ही मेहरबान और रह़मते रह़मान है कि उस की हर हर घड़ी रह़मत भरी है, रोज़ादार का सोना भी इ़बादत है, नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना बढ़ जाता है। दीगर महीनों में ख़ास दिन या ख़ास रातें बरकत वाली होती हैं मगर इस माहे करीम का हर दिन और हर रात रह़मतो बरकतों की कान हैं, दीगर इस्लामी महीनों की तारीख़ याद नहीं होती मगर इस माहे मुबारक का एक एक दिन गिन गिन कर गुज़ारा जाता है। अल्लाह पाक का हम बेह़द शुक्र अदा करत हैं कि उस ने हमें अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा फ़रमाया और हमें माहे रमज़ान की नेमत से नवाज़ा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! गुज़श्ता एक या दो साल से ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रमज़ान, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरग़ीब पर आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के "मकतबतुल मदीना" की त़रफ़ से रमज़ाने करीम की मुनासबत से मुख़्तलिफ़ पेनाफ़्लेक्स और कार्डज़ तय्यार किये जाते हैं जो उस की ऐप से घर बैठे ऑर्डर के ज़रीए मंगवा कर घर को सजाया जा सकता है।

माहे रमज़ान से मह़ब्बत की अछूती मिसाल

साल 2024 में ख़लीजी मुल्क अ़रब इमारात (दुबई) गवर्नमेंट की त़रफ़ से जारी कर्दा "ख़लीज न्यूज़" में इस ख़बर ने कई आ़शिक़ाने रसूल के दिलों को ख़ुश कर दिया कि माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद पर जो कोई अपने घर को सब से ज़ियादा डेकोरेट करे (यानी सजाए) गा उस को एक लाख दिरहम बत़ौरे इन्आ़म पेश किये जाएंगे, दूसरे और तीसरे नम्बर पर आने वालों के लिये भी इन्आ़मात का एलान किया गया।

ख़बर का उर्दू तर्जमा : ब्रांड दुबई (जो दुबई गवर्नमेंट मीडिया ऑफ़िस का एक शोबा है) और फ़िरजान दुबई ने "दुबई के बेहतरीन सजे हुए रमज़ान घरों" के मुक़ाबले के आग़ाज़ का एलान किया है। इस मुक़ाबले के ज़रीए दुबई के रिहाइशी ख़ानदानों को दावत दी गई है कि वोह पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक के दौरान अपने घरों को सजावट और रौशनियों से आरास्ता करें इस मुक़ाबले में शानदार इन्आ़मात रखे गए हैं, जिन में

- **पहली पोज़ीशन ह़ासिल करने वाले को 100,000 दिरहम,**
- **दूसरी पोज़ीशन वाले को 60,000 दिरहम,**
- **और तीसरी पोज़ीशन वाले को 40,000 दिरहम दिये जाएंगे।**

इब्तिदाई तीन इन्आमात के सिवा, सात शुरका को दो अफ़राद के लिये उ़मरा के टिकट भी दिये जाएंगे। येह मुक़ाबला तरग़ीब देता है कि अपने घरों को ख़ूबसूरती से सजा कर रमज़ानुल मुबारक को भरपूर अन्दाज़ में मनाएं। रमज़ानुल मुबारक के रुख़्सत होने से चन्द दिन पहले इदारे को जिन लोगों ने अपने घरों को सजा कर पैग़ामात भेजे, उन में इन्आमात तक़्सीम किये गए, पढ़ने वालों के लिये रग़बत का सामान करते हुए इस मुक़ाबले में पहले नम्बर पर आने वाले घर की तस्वीर (जो कि इसी किताब के टाइटल पर मौजूद है) और मुकम्मल ख़बर QR कोड की सूरत में पेशे ख़िदमत है, इस घर को सजाने वालों का कहना है कि हमें येह घर सजाने में कमो बेश पांच दिन लगे।

इ़बादत और माहे रमज़ान की ताज़ीम में एहतिमाम

सह़ाबिये नबी, ह़ज़रते तमीमदारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने चार हज़ार दिरहम का एक महंगा और उ़म्दा लिबास ख़रीद कर रखा हुवा था लिहाज़ा जिस रात लैलतुल क़द्र का गुमान होता तो ख़ुसूसिय्यत के साथ इसी लिबास को पहनते और पूरी रात ज़िक्रो इ़बादत में गुज़ार देते थे। (التہجد وقیام اللیل لابن ابی الدنیا، 1/311 ملخصًا)

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा ह़ज़रते नोमान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ रात की नमाज़ के लिये क़ीमती क़मीस, पाजामा, इ़मामा और चादर पहनते थे जिस की क़ीमत डेढ़ हज़ार दिरहम थी, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ हर रात नमाज़ ऐसे लिबास में पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि "जब हम लोगों से अच्छे लिबास में मिलते हैं तो अल्लाह पाक से आला लिबास में मुलाक़ात क्यूं न करें।" (تفسیر روح البیان، پ8، الاعراف، تحت الآیۃ: 31، 3/154 ملخصًا)

माहे रमज़ान की लाइटिंग में एहतियात़

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! रमज़ानुल मुबारक की सजावट हो या माहे मीलाद की, इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि जब रात देर गए लोगों की चहल पहल ख़त्म हो जाए तो उस वक़्त घरों की सजावट (लाइट्स वग़ैरा) बन्द कर दी जाएं

क्यूंकि इन रौशनियों का मक़्सद लोगों के दिलों में माहे रमज़ान की अ़ज़मतो ताज़ीम और माहे मीलाद शरीफ़ में ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुनिया में तशरीफ़ लाने की ख़ुशी का इज़्हार करना होता है, जब लोगों की आमदो रफ़्त ख़त्म हो गई तो गोया सजाने का मक़्सद पूरा हो गया। लिहाज़ा अपने अपने अ़लाक़े के उ़र्फ़ो ह़ालात के मुताबिक़ लाइट्स बन्द कर दीजिये।

मस्जिद के चन्दे से माहे रमज़ान की सजावट

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपनी किताब "चन्दे के बारे में सुवाल जवाब" में लिखते हैं : अगर चन्दा देने वालों की सराह़तन या दलालतन इजाज़त हो तो कर सकते हैं वरना नहीं। सराह़तन से मुराद येह है कि मस्जिद के लिये चन्दा लेते वक़्त कह दिया कि हम आप के चन्दे से जशने विलादत और ग्यारहवीं शरीफ़, शबे बराअत वग़ैरा बड़ी रातों के मवाक़ेअ़ पर नीज़ रमज़ानुल मुबारक में मस्जिद में रौशनी भी करेंगे और उस ने इजाज़त दे दी। दलालतन येह है कि चन्दा देने वाले को मालूम है कि इस मस्जिद पर जशने विलादत और दीगर बड़ी रातों के मवाक़ेअ़ पर और रमज़ानुल मुबारक में चराग़ां होता है और उस में मस्जिद ही का चन्दा इस्तिमाल किया जाता है। आ़फ़िय्यत इसी में है कि चराग़ां वग़ैरा के लिये अलग से चन्दा किया जाए, जितना चन्दा हो जाए उसी से चराग़ां कर लिया जाए और चराग़ां में जो कुछ बिजली ख़र्च हुई उस के पैसे भी उसी से अदा किये जाएं। (चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 20)

घरेलू मस्जिद बनाना सुन्नत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! घर में जो जगह नमाज़ के लिये मुक़र्रर (यानी FIX) की जाए उसे "मस्जिदे बैत" कहते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 22/479 मुलख़्ख़सन) अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपनी मस्जिद में नमाज़ अदा कर ले तो उसे

चाहिये कि अपने घर के लिये नमाज़ में से कुछ हिस्सा बचा रखे क्यूंकि अल्लाह पाक उस नमाज़ के सबब उस के घर में ख़ैरो बरकत अ़ता फ़रमाएगा।” (مسلم، ص306، حدیث:1822)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! पहले के पाकीज़ा दौर के मुसलमानों के घरों में मस्जिदे बैत (यानी घरेलू मस्जिद) हुवा करती थी। अफ़सोस ! अब घरों में बेडरूम, ड्राइंग रूम, ड्रेसिंग रूम, स्टडी रूम, फ़िटनेस रूम, T.V लाउंच और न जाने क्या क्या बनाया जा रहा है ! अगर नहीं बनाते तो “मस्जिदे बैत” और “वुज़ू ख़ाना” नहीं बनाते। हिम्मत कीजिये ! अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने घर में मस्जिदे बैत बनाइये और सवाब के हक़दार बनिये। “बहारे शरीअ़त” में मस्जिदे बैत की तरग़ीब दिलाते हुए लिखा है : “औ़रत के लिये येह मुस्तह़ब भी है कि घर में नमाज़ पढ़ने के लिये कोई जगह मुक़र्रर कर ले और चाहिये कि उस जगह को पाक साफ़ रखे और बेहतर येह कि उस जगह को चबूतरा वग़ैरा की त़रह़ बुलन्द कर ले। बल्कि मर्द को भी चाहिये कि नवाफ़िल के लिये घर में कोई जगह मुक़र्रर कर ले कि नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है।” (बहारे शरीअ़त, 1/1021, हिस्सा : 5-درمختار مع ردالمحتار، 3/494)

याद रखिये ! मस्जिदे बैत के लिये पूरा कमरा (Room) होना जाइज़ तो है मगर ज़रूरी नहीं, किसी कमरे में एक फ़र्द नमाज़ पढ़ सके इतनी जगह भी अगर (Fix) कर ली तो वोह भी काफ़ी है, इस की अलग से तामीर वग़ैरा भी ज़रूरी नहीं।

(फ़ैज़ाने नमाज़, स. 532 बि तग़य्युरिन)

मज़ीद मालूमात के लिये दावते इस्लामी की वेबसाइट से रिसाला “घरेलू मस्जिद बनाना सुन्नत है” पढ़िये और सवाब की निय्यत से दूसरों को भी शेयर कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰی مُحَمَّد

रमज़ानुल करीम की सजावट करने वालों के लिये पैग़ामे अमीरे अहले सुन्नत और दुआ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ एक बहुत प्यारी, अनोखी और ख़ुशियों भरी बात

अ़र्ज़ करने जा रहा हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! माहे रमज़ान की तशरीफ़ आवरी होने वाली है। एक बा अ़ज़मत मेहमान तशरीफ़ ला रहा है। मेहमान जब आता है तो सजावट अच्छी लगती है, क्या ही अच्छा हो कि माहे रमज़ान के आने से पहले हम अपने घर, दुकानें वग़ैरा सजा कर इस्तिक़बाले रमज़ान की तय्यारियां करें।

इस में येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि हर शख़्स अपनी जेब से रमज़ाने करीम की ख़ुशी में अपना घर वग़ैरा सजाए, अगर गलियां भी सजा सकते हैं तो येह भी अच्छी बात है लेकिन येह बात ज़ेहन में रखियेगा कि अगर किसी के पास जशने विलादत में सजावट के लिये चन्दे के पैसे हैं तो इस रक़म को किसी और मक़्सद में इस्तिमाल नहीं किया जा सकता। चूंकि रमज़ान शरीफ़ में इस की उ़र्फ़न इजाज़त नहीं है, इस लिये चन्दे के पैसों से इस त़रह़ की सजावट नहीं की जा सकती। अगर उ़र्फ़ से हट कर मस्जिद या मद्रसे के चन्दे को इस्तिमाल किया गया तो येह गुनाह होगा।

अल्लाह पाक रमज़ाने करीम की ख़ुशियों को दोबाला फ़रमाए। सारे इदारे और अन्जुमनें अपने अपने त़ौर पर सजावट करें। जशने विलादत और रमज़ानुल करीम की सजावट में फ़र्क़ होना चाहिये ताकि दोनों में इम्तियाज़ बाक़ी रहे मसलन इस त़रह़ का बोर्ड लगाएं जिस पर "**रमज़ाने करीम मुबारक हो**" लिखा हो, اِنْ شَآءَاللّٰه मैं ने भी अपने ग़रीब ख़ाने को सजाने की निय्यत कर ली है।

या अल्लाह पाक ! जो कोई माहे रमज़ान में अपना घर, दुकान या मह़ल्ला सजाए, उस के इन्तिक़ाल के बाद उस की क़ब्र नूरे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ता ह़शर जगमगाती रहे, रौशन रहे।

मैं ने घर को सजा लिया सुन लो ! आओ ख़ुशियों के फूल सब चुन लो
काश ! हो जाए ख़ुश मेरा रह़मां वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

اٰمین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

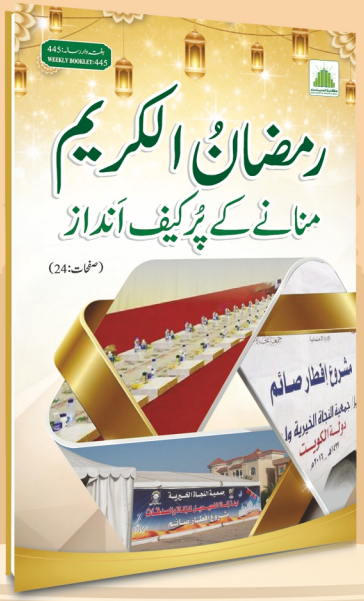

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025